# वस्तुनिष्ठ प्रश्नों पर आधारित परीक्षा-2

पूर्णांक-40

निर्देश- कुल 40 प्रश्न दिये गए हैं। प्रत्येक प्रश्न का मान समान है। सही उत्तर का विकल्प प्रश्न संख्या के सामने लिखें।

1. दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च सूत्र का समीचीन अर्थ है- दूर, अन्तिक (निकट) तथा इनके समानार्थक शब्दों में द्वितीया, तृतीया, पंचमी तथा सप्तमी विभक्तियाँ होती हैं।

   (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

2. 'अनुर्लक्षणे' का समीचीन अर्थ है-विशेष हेतु को लक्षित करने के लिए जब 'अनु' का प्रयोग होता है तब यह प्रवचनीय बन जाता है, यथा-'जपमनु प्रावर्षत्' अर्थात् जप समाप्त होते ही वृष्टि हो गयी । यहाँ जप ही वृष्टि का कारण हुआ।

   (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

3. 'तृतीयार्थे' का समीचीन अर्थ है- अनु' से तृतीया होने पर उसकी प्रवचनीय संज्ञा होती है, यथा-'नदीम् अन्वसिता सेना' (नद्या सह सम्बद्धा)

   (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

4. 'हीने' का समीचीन अर्थ है- 'अनु' से हीन अर्थ लक्षित होने पर वह प्रवचनीय कहलाता है, यथा-'अनु हरिं सुराः' देवता हरि के बाद ही आते हैं अर्थात् हरि से कुछ नीचे ही हैं।

   (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

5. उपोऽधिके च का समीचीन अर्थ है-'अधिक' तथा 'हीन' अर्थ का वाचक होने पर 'उप' भी प्रवचनीय कहलाता है, किन्तु हीन का अर्थ लक्षित होने पर द्वितीया होती है, अन्यथा सप्तमी होती है, यथा - उप हरिं सुराः' अर्थात् देवता हरि से कुछ नीचे पड़ते हैं, अधिक अर्थ मैं "उपपरार्धे हरेर्गुणाः' अर्थात् परार्ध से अधिक (ऊपर) ही हरि के गुण होंगे।' 'उपपरार्धम्' ऐसा प्रयोग नहीं होगा।

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

6. लक्षणेत्थंभूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः का समीचीन अर्थ है- "जब किसी ओर संकेत करना हो, या जब 'ये इस प्रकार के हैं' ऐसा बतलाना हो, या 'यह उनके हिस्से में पड़ता है' या पुनरुक्ति बतलानी हो तब प्रति, परि और अनु प्रवचनीय कहलाते हैं और इनके योग में द्वितीया विभक्ति होती है, यथा-

प्रासादं प्रति विद्योतते विद्युत् ( बिजली महल पर चमक रही है )

भक्तो हरिं प्रति पर्यनु वा (हरि के ये भक्त हैं )

लक्ष्मी: हरिं प्रति (लक्ष्मी विष्णु के हिस्से पड़ी)

लतां लतां प्रति सिंचति (प्रत्येक लता को सींचता है)।

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

7. अभिरभागे का समीचीन अर्थ है-भाग को छोड़कर अन्य समस्त ऊपर के अर्थों में 'अभि' कर्मवचनीय कहलाता है,

यथा-हरिम् अभिवर्तते ।

भक्तो हरिमभि।

देवं देवमभिषिञ्चति ।

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

8. उपपद विभक्तियों का अर्थ है - कारकों से सदैव विभक्तियों का ही निर्देश नहीं होता, अपितु ये विभक्तियाँ वाक्य में अनु, अन्तरा, विना, प्रति, सह आदि निपातों तथा नमः, स्वाहा, अलम् आदि अव्ययों के योग से भी व्यवहृत होती हैं और 'उपपद विभक्तियाँ' कहलाती हैं, जैसे-

**अन्तरान्तरेण युक्ते** अन्तरा (बीच में ), अन्तरेण ( विना, विषय में, छोड़कर) शब्दों की जिससे सन्निकटता प्रतीतत: होती है उसमें द्वितीया होती है, यथा- (अन्तरा) गङ्गां यमुनां चान्तरा प्रयागराजः अस्ति (गंगा और यमुना के बीच में प्रयाग राज है), अन्तरा त्वां मां हरिः।

(अन्तरेण) ज्ञानमन्तरेण (ज्ञानं विना वा) नैव सुखम् (ज्ञान के बिना सख नहीं है)

राममन्तरेण न किंचिद् जानामि (राम के विषय में कुछ नहीं जानता हूँ।)

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

9. अभितः परितः समयानिकषा हा प्रतियोगेऽपि वा० के अनुसार अभितः (चारों ओर) परितः (सब ओर) समया, निकषा (समीप) हा, प्रति (ओर तरफ) के साथ कौन-सी विभक्ति का प्रयोग होता है?

(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी

10. गत्यर्थकर्मणि द्वितीयचतुथ्यौ चेष्टायामध्वनि का अर्थ है- गत्यर्थक धातुओं (गम्, चल , या इण ) का कर्म जब मार्ग नहीं रहता है तब चतुर्थी और द्वितीया होती है, यथा-गृहं गृहाय वा गच्छति–यहाँ जाने में हाथ, पैर आदि अंगों का हिलना-डुलना रहा और गृह मार्ग नहीं है। मार्ग में द्वितीया होती है—पन्थानं गच्छति । शरीर के व्यापार न करने पर-चेतसा हरिं व्रजति (केवल द्वितीया)।

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

11. "शी, स्था, तथा आस् धातुओं के पूर्व यदि 'अधि' उपसर्ग लगा हो तो इन क्रियाओं का आधार क्या कहलाता है?

(क) कर्म (ख) कर्त्ता (ग) क्रिया (घ) कोई भी नहीं

12. उभयतः, सर्वतः, धिक्, उपर्युपरि, अधोऽधः तथा अध्यधि शब्दों की जिससे सनिकटता पायी जाती है उसमें कौन-सी विभक्ति होती है?

(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी

13. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे सूत्र के अनुसार समय और मार्गवाची शब्दों में द्वितीया होती है, यदि अन्त तक पूरे काल या मार्ग का ज्ञान हो, यथा- रमेशः पञ्च वर्षाणि अधिजगे (रमेश ने पूरे पाँच वर्षों तक पढ़ा)

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

14. एनप् प्रत्ययान्त शब्द की जिससे निकटता प्रतीत होती है, उस में द्वितीया या षष्ठी होती है, यह कैसा सूत्र से लागू होता है?

(क) एनपा द्वितीया (ख) अन्तरान्तरेण युक्ते (ग) अनुर्लक्षणे (घ) कोई भी नहीं

15. दुह्याच् पच् दण्ड् रुधि प्रच्छि चि ब्रू शासु जिमन्थमुषाम्।

कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यानीहृकृष्वहाम्॥ इसमें 16 द्विकर्मक धातुओं की गणना है।

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

16. क्रिया की सिद्धि में जो अत्यन्त सहायक होता है उसे क्या कहते हैं।

(क) कर्त्ता (ख) कर्म (ग) करण (घ) संप्रदान

17. करण में तृतीया विभक्ति होती है और कर्मवाच्य या भाववाच्य के कर्ता में भी तृतीया विभक्ति होती है। यह किस सूत्र से स्थापित होता है?

(क) एनपा द्वितीया (ख) अन्तरान्तरेण युक्ते (ग) अनुर्लक्षणे (घ) कर्तृकरणयोस्तृतीया

18. इत्थंभूतलक्षणे सूत्र किस विभक्ति का प्रतिपादक है?

(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी

19. येनाङ्गविकारः सूत्र किस विभक्ति का प्रतिपादक है?

(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी

20. कारण ( हेतु ) बोधक शब्दों में तृतीया होती हैं, यह किस सूत्र से प्रतिपादित होता है?

(क) हेतौ (ख) अन्तरान्तरेण युक्ते (ग) अनुर्लक्षणे (घ) कर्तृकरणयोस्तृतीया

21. पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम् बताता है कि पृथक् (अलग), विना, नाना शब्दों के साथ द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी विभक्तियों में से कोई एक विभक्ति हो सकती है।

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

22. प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम् वा० के अनुसार प्रकृति (स्वभाव) आदि क्रिया विशेषण शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है, यथा- मोहनः सुखेन जीवति ( मोहन सुख से रहता है । )

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

23. सह, साकम् , सार्धम् , समम् के साथ वाले शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है, यह किस सूत्र से प्रतिपादित होता है?

(क) हेतौ (ख) सहयुक्तेऽप्रधानम् (ग) अनुर्लक्षणे (घ) कर्तृकरणयोस्तृतीया

24. अपवर्ग या फल प्राप्ति में काल-सातत्यवाची तथा मार्ग-सातत्यवाची शब्दों में तृतीया होती है। जितने समय या मार्ग चलते-चलते कार्य सिद्ध होता है उसमें तृतीया होती है। ये किस सूत्र से प्रतिपादित होता है?

(क) अपवर्गे तृतीया

(ख) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे

(ग) क और ख – दोनों

(घ) कर्तृकरणयोस्तृतीया

25. 'तुला' तथा 'उपमा' इन दो शब्दों को छोड़कर शेष सब तुल्य (समान बराबर) का अर्थ बताने वाले शब्दों के साथ तृतीया अथवा षष्ठी होती है- यह किस सूत्र से प्रतिपादित है?

(क) अपवर्गे तृतीया

(ख) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे

(ग) क और ख – दोनों

(घ) तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयाऽन्यतरस्याम्

26. यज् धातु के कर्म की करण संज्ञा होती है और सम्प्रदान की कर्म संज्ञा, यथा- पशुना रुद्रं यजते (भगवान् रुद्र को पशु चढ़ाता है)- यह किस वार्त्तिक से प्रतिपादित है?

(क) अपवर्गे तृतीया

(ख) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे

(ग) यजेः कर्मणः करणसंज्ञा सम्प्रदानस्य च कर्म संज्ञा वा०

(घ) तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयाऽन्यतरस्याम्

27. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् का सही अर्थ है-

(क) दान के कर्म द्वारा कर्त्ता जिसे सन्तुष्ट करना चाहता है, वह पदार्थ सम्प्रदान कहलाता है

(ख) सम्प्रदान में चतुर्थी होती है,

(ग) सम्प्रदान का अर्थ है "अच्छा दान'

(घ) कोई नहीं

28. सम्प्रदान में कौन-सी विभक्ति होती है?

(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी

29. क्रियया यमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम् वा॰ का अर्थ है कि न केवल दान कर्म द्वारा अपितु किसी विशेष क्रिया द्वारा जो इष्ट (अभिप्रेत) हो वह भी संप्रदान कहलाएगा।

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

30. अशिष्टव्यवहारे दाण: प्रयोगे चतुर्थ्यर्थे तृतीया वा॰ का अर्थ है कि अशिष्ट व्यवहार में दान का पात्र संप्रदान नहीं होगा, उसमें चतुर्थी अर्थ होने पर भी तृतीया होगी। जैसे- दास्या संयच्छते कामुक: - यहाँ अशिष्ट व्यवहार है अतः दासी में तृतीया का प्रयोग हुआ किन्तु पत्नी के अर्थ में चतुर्थी का प्रयोग होगा- भार्यायै संयच्छति।

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

31. उत्पातेन ज्ञापिते च वा॰ का अर्थ है कि कोई उत्पात किसी आशिभ घटना का सूचक हो तो उसमें चतुर्थी होती है। जैसे- कपिला विद्युत् वाताय (लाल विद्युत आँधी की सूचक है)

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

32. हित तथा सुख के साथ भी कौन-सी विभक्ति होती है?

(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी

33. गत्यर्थकमणि द्वितीया चतुर्थों चेष्टायामध्वनि का आरटीएच है कि गत्यर्थक धातु के साथ यदि चेष्टा हो तो द्वितीया और चतुर्थी होती है,

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

34. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः का अर्थ है कि √रुच् तथा √रुच् के अर्थवाली धातुओं के योग में प्रसन्न होनेवाला संप्रदान कहलाता है, उसमें चतुर्थी होती है,

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

35. धाररुत्तमर्णः और स्पृहेरीप्सितः सूत्र किस विभक्ति के प्रतिपादक हैं?

(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी

36. क्रुधद्रुहेर्ष्यार्थानां यं प्रति कोपः का अर्थ है कि √क्रुध् ,√द्रुह्, √ईर्ष्य्, √असूय्, धातुओं के योग में तथा इन धातुओं के समान अर्थ वाले धातुओं के योग में जिस पर क्रोध किया जाता है, उसमें चतुर्थी होती है-

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

37. क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म का अर्थ है कि जब √क्रुध् तथा √द्रुह् उपसर्ग सहित होती हैं तब जिसके प्रति क्रोध या द्रोह किया जाता है वह कर्म संज्ञक होता है सम्प्रदान नहीं, यथा- गुरुः शिष्यं संक्रुध्यति ।

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

38. नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च के अनुसार किस विभक्ति का निर्धारण होता है?

(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी

39. उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिर्बलीयसी (प०) का अर्थ है कि पद सम्बन्धी विभक्ति से क्रिया सम्बन्धी विभक्ति बलवती होती है। इस नियम के अनुसार 'नमस्करोति' इत्यादि क्रिया पदों के योग में चतुर्थी विभक्ति न होकर द्वितीया विभक्ति होती है- लक्ष्मीं नमस्करोति ।

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं

40. परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम के अनुसार परिक्रयण में जो करण होता है वह विकल्य से सम्प्रदान होता है, "परिक्रयण' का अर्थ है निश्चित काल के लिए किसी को वेतन पर रखना यथा – शतेन शताय वा परिक्रीतः।

(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य और असत्य (घ) कोई भी नहीं